दीप ज्योति

क्रिया शब्द वर्ण नाम स्त्रीलिंग संज्ञा

भाग 2

हिंदी व्याकरण

सर्वनाम वचन विलोम

अशोक लव

एम. ए., बी. एड.

(लेखक एवं शिक्षाविद्)

पूर्व हिंदी-संस्कृत विभागाध्यक्ष

द एयर फ़ोर्स स्कूल सुब्रोतो पार्क

नई दिल्ली–110010

प्रकाशक:

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

नांगल राया, नई दिल्ली-110046

फोन : 28111758, 28113958

Fax : 28112353

E-mail : evershinepub@gmail.com

डिज़ाईन और टाइपसैटिंग:
रेड रीफ डिज़ाइन स्टूडियो, दिल्ली

© एवरशाइन पब्लिशर्ज़

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

₹ 150

भूमिका

प्रत्येक भाषा के ज्ञान के लिए उसके व्याकरण का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक होता है। व्याकरण द्वारा ही भाषा के शुद्ध प्रयोग का ज्ञान आता है। भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के व्यावहारिक शुद्ध प्रयोग व्याकरण द्वारा ही किया जा सकता है। हिंदी विश्व की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक बोली जाती है। इसलिए इसे भारत की संपर्क भाषा भी कहा जाता है। यह राष्ट्रभाषा और राजभाषा तो है ही। इस दृष्टि से प्रत्येक भारतवासी के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक हो जाता है और व्यवहार में प्रयोग करने के लिए इसके व्याकरण का ज्ञान भी आवश्यक है।

व्याकरण की यह शृंखला प्राथमिक कक्षाओं के लिए तैयार की गई है। इसे विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले नन्हें शिशुओं से लेकर पाँचवी कक्षा के विद्यार्थियों को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किया गया है। इसकी भाषा सरल है। उदाहरणों और गतिविधियों के माध्यम से व्याकरण नियमों को रूचिकर बनाया गया है। अभ्यास के लिए पर्याप्त प्रश्न दिए गए हैं। सतत् मूल्यांकन के लिए मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। बहुविकल्पी प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों की चयन-क्षमता के मूल्यांकन के लिए प्रश्न दिए गए हैं।

पर्यायवाची, विलोम, समरूपी भिन्नार्थक, उपसर्ग, प्रत्यय, मुहावरे-लोकोक्तियाँ आदि पर्याप्त संख्या में दिए गए हैं।

व्याकरण के प्रत्येक नियम को उदाहरणों द्वारा 'करके सीखने' की पद्धति को दृष्टिगत रखकर समझाया गया है। इनसे विद्यार्थियों की सीखने की रूचि बढ़ती है।

अध्यापक-अध्यापिकाएँ विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय का ज्ञान प्रदान करते हैं। यह व्याकरण- शृंखला हिंदी भाषा के ज्ञान प्रदान करने में उनकी सहायक होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। तीस वर्षों तक हिंदी शिक्षण से संबद्ध रहने के कारण हमने इस शृंखला को व्यावहारिक रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰ द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार 'दीप-ज्योति' व्याकरण शृंखला समस्त विद्यालयों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

—अशोक लव

अनुक्रमाणिका

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	भाषा (LANGUAGE)	4
2.	वर्ण (ALPHABET)	6
3.	मात्राएँ (VOWEL SYMBOLS)	9
4.	शब्द और वाक्य (WORDS AND SENTENCES)	12
5.	नाम शब्द (NAMING WORDS)	16
6.	नाम की जगह (IN PLACE OF A NAME)	20
7.	लिंग (GENDER)	22
8.	एक-अनेक (ONE-MANY)	25
9.	कैसा-कितना (DESCRIBING WORDS)	28
	मूल्यांकन–1	31
10.	काम वाले शब्द (DOING WORDS)	32
11.	समान अर्थवाले शब्द (SYNONYMS)	35
12.	विलोम शब्द (ANTONYMS)	38
13.	शब्द-समूह के लिए एक शब्द (ONE WORD FOR MANY)	41
14.	दिन और महीने (DAYS AND MONTHS)	43
15.	निबंध लेखन (ESSAY WRITING)	46
16.	कहानी लेखन (STORY WRITING)	48
17.	सूरज जल्दी आना जी!	53
18.	आओ कुछ करें	55
	मूल्यांकन–2	56

1. भाषा (LANGUAGE)

मन के भावों को समझने तथा समझाने के माध्यम को भाषा कहते हैं। हम अपने मन के भावों को बोलकर, लिखकर या संकेतों द्वारा दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

बोलकर

लिखकर

प्रतिभा अपनी नानी को पत्र लिख रही है। वह परीक्षा में पास हो गई है। उसकी नानी पत्र पढ़कर प्रतिभा की बातों को समझ जाएगी।

संकेत द्वारा

हमारे देश में पंजाबी, बंगाली, उर्दू, अंग्रेज़ी, संस्कृत, तमिल मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिंदी की लिपि देवनागरी है।

भाषा के शुद्ध रूप को समझने के लिए व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है। व्याकरण से ही पता चलता है कि कौन-सा शब्द या वाक्य शुद्ध है और कौन-सा अशुद्ध।

व्याकरण भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने और पढ़ने का ज्ञान कराता है। छोटे बच्चे परिवार में सुनकर बोलना सीख लेते हैं, किंतु भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग नहीं कर पाते।

जैसे –	लड़की जाता है।	(अशुद्ध)	लड़की जाती है।	(शुद्ध)
	गाय दूध देता है।	(अशुद्ध)	गाय दूध देती है।	(शुद्ध)
	बारिश हो रहा है।	(अशुद्ध)	बारिश हो रही है।	(शुद्ध)

अभ्यास

चित्रों का मिलान शब्दों से करो:

झुको

कूदो

मुड़ो

नमस्ते

आउट

आगे